अध्याय 14

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[एकान्त समय]* **यूहन्ना 18:28-21:25**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से पढं) संक्षेप में ***बताएं*** कि अपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (यूहन्ना 18:28-21:25)से क्या सीखा।
अपने अभुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[मसीह में नया जीवन]* **मसीह: 2 कुरिन्थियो 5:17**

याद करने वाले वचनों की अगली श्रृंखला "मसीयों में नयें जन्म के विषय में है। पाँच याद करने वाले वचनों के शीर्षक है: मसीह, वचन, प्रार्थना, संगती तथा साक्षी!

क-ध्यान करना

निम्नलिखित याद करने वाले को वचन को श्वेत/श्याम पट पर लिखें

मसीह 2 कुरिन्थियों 5:17
(इसलिए यदि कोई मसोह में है तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गयी है, सब कुछ नया हो गया है।" 2 कुरिन्थियो 5:17)

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पद लिखें:

1. मसीह के साथ पौलुस का सम्बन्ध किस प्रकार बदला?

पौलुस के मन परिवर्तन से पहले, वह एक कट्टर फरीसी था! वह दिमागी तौर पर यीशु मसीह को जानता था तथा यीशु मसीह को सांसारिक दृष्टि से देखता था (16) अर्थात संसार की बाहरी रीति के अनुसार! संसार मनुष्य के बाहरी रूप को देखकर न्याय करता है, उन्हें हृदय में छुपी बातों को देखकर नहीं! यीशु के बढ़ई होने के कारण, उन्होंने उसे शिक्षक के रूप में अस्वीकार कर दिया। यीशु के रब्बियों के स्कूल में शिक्षा न लिए जाने की वजह से उन्होंने उसकी शिक्षाओं को अस्वीकृत कर दिया। पापियों व चुंगी लेने वाले से मित्रता होने के कारण, उन्होंने उसे पापी जाना। इसलिए यीशु ने उनसे कहा कि "तुम नहीं जानतें हो कि मैं कहाँ से

आया हूँ और अब कहाँ जाता हूँ! तुम शरीर के अनुसार न्याय करतें हो (यूहन्ना 8:14-15) आज भी संसार के दूसरे धर्म "शरीर के अनुसार" यीशु मसीह का न्याय करते हैं। लेकिन पालुस के मन परिर्वतन के समय, पौलुस यीशु से आमने सामने मिला (प्रेरितों 26:12-18)। उसके बाद पौतुस ने यीशु मसीह के बारे में पुराने तरीके से न सोचा।

2. मसीह में होने का क्या अर्थ?

स्वर्गीय दृष्टिकोण से केवल दो प्रकार के लोग पाये जाते हैं । लोग या तो "मसीह में" या सांसार में पाये जाते हैं। सवाल यह उठता है कि क्या आप मसीह में ह? इसका अर्थ है; "क्या आपने नया जन्म पाया है? क्या आपने पवित्र आत्मा पाया है?" (2 कुरिन्थियों 13:5) "क्या आप एक नई सृष्टि ह?" "क्या पुरानी बातें बीत गयी है?" "क्या सब कुछ नया हो गया है? 2 कुरिन्थियों 5:17 इसी बारे में बात कर रहा है।

मसीह में आने का अर्थ, यीशु मसीह व उसकी मृत्यु तथा आपके लिए उसके पुनरूत्थान पर विश्वास करना है। यीशु मसीह की मृत्यु व पुनरूत्थान पर विश्वास करने के द्वारा कोई भी जन यीशु मसीह से जुड़ जाता है। जिस क्षण कोई व्यक्ति यीशु पर विश्वास करता है वह "यीशु में" है।
"मसीह में" कहना, मसीह उद्धार की अति अल्प परिभाषा है यह मसीह उद्धार की असीमित महानता का निचोड़ है यीशु मसीह कौन है और उन्होंने क्या किया, का आपके भविष्य में क्या होने जा रहा है पर गहरा असर पड़ता है।

उदहारण:

- क्योंकि यीशु मसीह मरे, इसलिये आप भी मर गये। क्योकि यीशु ने आपके सारे पापों के दण्ड को अपने ऊपर उठा लिया, आपको क्षमा कर दिया गया, आपको धर्मी घोषित कर दिया गया है,और आप पर कभी दोष नहीं लगया जाएगा। और यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर कभी दोष नहीं लगाया जाएगा।
- यीशु मसीह जी उठने के कारण ,आपका आत्मा भी जी उठा, नया जन्म पाया या पुन: रचित हो गया, और यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर आपका शरीर भी जी उठेगा।
- क्योंकि यीशु मसीह ही एक मात्र ऐसा जन है, जिससे परमेश्वर पिता प्रसन्न है, इसलिए परमेश्वर ने आपको स्वीकार किया है और वह आपसे भी प्रसन्न है
- क्योंकि यीशु ने शैतान को बाँध दिया है, इसलिए आप भी शैतान का सामना कर सकते हैं तथा यीशु मसीह के साथ मिलकर लोगो को अन्धकार के राज्य से बाहर निकाल कर, उन्हें ज्योंति के राज्य में प्रवेश करा सकते हैं।
- यीशु मसीह सत्य है, इसलिए आप अब परमेश्वर के बारे में, अपने आप के बारे में, इस संसार और भविष्य के बारे में सच्चाई जानते हैं। तथा भविष्य से सम्बन्धित सत्य को जानते है।
- क्योंकि यीशु मसीह के वारिस होने के कारण, आप भी उसकी विरासत अर्थात नये स्वर्ग व नई धरती के वारिस होंगे।
- क्योंकि यीशु परमेश्वर के राज्य का राजा है, इसलिए आप यीशु के साथ राज्य करेंगे।

कोई भी इच्छुक जन मसीह में आ सकता है। उसे केवल यीशु मसीह पर विश्वास करना या अपने हृदय या मन को यीशु के हाथों में सौपने की जरूरत होगी। विश्वास करें कि वह पापों की क्षमा के लिए मरा और वह इसलिए पुन: जीवित हो गया ताकि आप एक नया जीवन पा सकें।

3. कौन सी पुरानी बातें बीत गयी हैं?

"पुरानी बातें बीत गयी हैं" को ही नये जीवन के रूप में परिभाषित किया गया है। इस वाक्य को यूनानी भाषा में भूतकाल में लिखा गया है जो यह बताता है *कि पुरानी बातें एक निर्धारित समय मे ढल गयी या जाती रहीं,* तथा उस अनुभव को नये जन्म का नाम दिया गया। बीत गयी पुरानी बातों में, पुरानी मान्यताएं, स्थापित मत, गलतफहमियाँ तथा जीवन की वह कुरीतियाँ शामिल ह, जिनका गुलाम व्यक्ति नया जन्म पाने से पहले हुआ करता था। यीशु मसीह प्रत्येक विश्वासी के पापों के लिए मरे (1पतरस 2:24) इसलिए प्रत्येक विश्वासी पहले से ही नई सृष्टि है।

एक मसीहो भविष्य में अपने लिए नहीं, बल्कि यीशु मसीह के लिए जीवन व्यतीत करता है, जिसने उसके लिए अपना प्राण दिया (2 कुरिन्थियों 5:15)। उसमें यीशु का रिश्ता बदल गया। मसोहो जन केवल संसारिक दृष्टि से मसीह का सम्मान नहीं करंगा (2 कुरिन्थियों 5:16)। यीशु मसीह से उसका रिश्ता बदल गया है। मसोही जन केवल संसारिक दृष्टि से दूसरों का सम्मान नहीं करंगा (2 कुरिन्थियों 5:16)। दूसरों के साथ उसका रिश्ता बदल गया है।

4) कौन सी नई बात प्रारम्भ हो गयी है?

नयी सृष्टि को "सब कुछ नया हो गया है" द्वारा सम्बोधित किया गया है। इस वाक्य को ग्रीक भाषा में निश्चित काल में लिखा गया है, जिसका अर्थ है कि "सभी पुरानी बातें नई हो गयी ह" तथा वह वर्तमान व भविष्य में सदा नई बनी रहेंगी। परमेश्वर की नई सृष्टि की नवीनता उन भौतिक वस्तुओं के समान नहीं है जिसे हम खरीदते हैं तथा वह समय के बीतने पर पुरानी हो जाती हैं। नई सृष्टि न धूमिल होती है, और न ही खराब होती है (1पतरस 1:3-4)। यह नवीनता सदैव नवीन बनी रहती है। यीशु मसीह में नया जीवन वास्तव में कितना सुन्दर है। मसीही लोग अब व्यवस्था को पूरा करने की कोशिश नहीं करते (गलातियों 6:15-16), बल्कि अनुग्रह के द्वारा जीवन व्यतीत करते हैं (यूहन्ना 1:16-17) मसीही लोग अन्य लोगों के साथ धार्मिक जीवन तथा परमेश्वर के साथ पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं (इफिसियों 4:24)। मसीही लोग परमेश्वर की योजना के अनुसार जीवन व्यतीत करते तथा भले कामों के द्वारा परमेश्वर की योजना को पूरा करते हैं, जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें सौपा है (इफिसियों 2:10)।

ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** मसीह : 2 कुरिन्थियों 5:17
3) ***पुनः अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) *[सम्बन्ध]* **मसीही प्रेम 1 कुरिन्थियों 13:1-13**

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए 1 कुरिन्थियों 13-1-13 का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर 1 कुरिन्थियों 13:1-13 को एक साथ पढ़ें।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है? या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?
लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हो। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बांटें)
आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।
(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

13:1-3

खोज 1. प्रेम, सांसारिक अभिलाषाओं से भिन्न होता है।

प्रेम संसार मे लोगों द्वारा अति सम्मानित सात बातों से भिन्न होता है (अन्य भाषा में बोलना, भविष्यवाणी करना, भेद प्रगट करना, ज्ञान प्रगट करना, विश्वास प्रगट करना, गरीबों में अपनी सम्पत्ति बांट देना तथा शहीद हो जाना) लेकिन यदि मैं इन सारे कामों को कर सकूँ लेकिन प्रेम न रखूँ तो मैं कुछ भी नहीं। मैं किसी अनन्त चीज का निर्माण नहीं कर सकता। यदि मैं बोलने में निपुण हूँ और अपने उपदेशों द्वारा लोगों के हृदय व मनों को बदलने की योग्यता रखता हूँ परन्तु मुझ में प्रेम नहीं है तो मैं सिर्फ उनकी मुसिबतों में उन्हें सांतावना प्रदान कर रहा या उनक विवेक से दोष दूर कर रहा हूँ। यदि मैं एक मसीही कार्यकर्ता बन जाता हूँ; महान बलिदान चढ़ाता और यहाँ तक कि कठिन परिस्थितियों व सताव के चलते अपने प्राणों की आहूति भी दे देता हूँ; लेकिन पम नहीं रखता, तो मुझे कुछ लाभ नहीं है। यदि मुझमें प्रेम नहीं है तो मुझे कोई भी बलिदान चढ़ाने से कोई फायदा नहीं है।

13:8-13

खोज 2. प्रेम को सबसे बडा माना गया है।

प्रेम को सबसे बड़ी सम्पत्ति माना गया है। प्रेम को महान सम्पत्ति इसलिए माना गया है क्योकि वह सदैव बना रहता है पद 8 में लिखा है; "प्रेम कभी टलता नहीं" प्रेम का कभी अन्त नहीं होता। जबकि दूसरी वस्तुएं या चीजें जिन्हें संसार उच्चकोटि का सम्मान व मान्यता देते हैं, सभी टलने जा रही ह। भविष्यवाणियाँ हों तो समाप्त हो जाएंगी क्याकि उनका काम खत्म हो गया और उनके पास बोलने के लिए कुछ भी नहीं है। मनुष्यों और स्वर्गदतों की बोलियां टल जाएंगी। यहाँ तक कि जिस ग्रीक भाषा में कुरिन्थियों को लिखा गया था, उस भाषा को अब कहीं पर भी इस्तेमाल नहीं किया जाता है। ज्ञान को उच्च स्तरीय स्थान दिया जाता है, लोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए वर्षों स्कूलों, विद्यालयों में व्यतीत कर देते हैं और ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रति दिन अपना काफी समय सामाचार पढ़ने, तथा टी.वी देखने में बिता देते हैं। फिर भी सारा ज्ञान समाप्त हो जाता है। कल के समाचार पत्र को जला दिया जाता है तथा दस वर्ष पुरानी वैज्ञानिकों की पुस्तका को कबाड़े में बेच दिया जाता है। सारा ज्ञान पुराना हो जाता है और किसी काम का नहीं बचता, प्रेरित पौलुस कुछ और उदहारणों को ले सकता था। उसने धन या सफलता या सामर्थ्य या पद या प्रसिद्धि की चर्चा नहीं की ये सारी बातें टल जाएंगी। पौलुस इनमें से किसी चीज का गलत नहीं कहता। वह तो केवल यह कहता है कि ये सब वस्तुए टल जाएंगी। अनश्वर प्राणी को अनश्वर चीजों को हासिल करने का प्रयास करना चाहिए। केवल तीन बातें ही स्थाई व अनन्त तक रहने वाली है विश्वास, आशा व प्रेम। इन सब में सबसे बडा प्रेम है; क्योंकि "परमेश्वर प्रेम है"।

कदम 3 प्रश्न व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद क आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?

आईये हम 1 कुरिन्थियों 13:1-13 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं आर फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछे।

लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये है)

13:4

प्रश्न 1. "प्रेम धीरजवन्त है" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी: धीरजवन्त प्रेम, इन्तजार कर सकता है। धीरज को प्रेम की प्रथम विशेषता के रूप में प्रगट किया गया है, क्यांकि धीरज के साथ ही प्रेम का प्रारम्भ होता है। प्रेम भलाई प्रगट करने में जल्दबाजो नहीं करता, बल्कि वह भलाई प्रगट करने में इन्तजार कर सकता है। अत: धीरज वह लगाम है जिसके द्वारा परमेश्वर अपने प्रेम प्रगट करने के भाव को नियन्त्रित करता है। प्रेम, लोगों के जीवनों व परिस्थितियों में परमेश्वर के काम करने का इन्तजार करता है।

प्रेम धीरजवन्त होने के साथ साथ, नम्रता व शान्त आत्मा द्वारा भी अलंकृत होता है। धीरज, कठिनाईयों, उसकाने, दर्द और लोगों की कमज़ोरियों को बिना चिड़चिड़ाए, निराश या गुस्सा हुए सह लेता है।

13:4

प्रश्न 2. "प्रेम कृपालु है" का क्या अभिप्राय हैं

टिप्पणी: कृपा प्रतिक्रिया करने वाला प्रेम भाव है। कृपा हमेशा दूसरों की सहायता व भले काम करने के प्रति जागरूक रहती है। बाइबल हमें बताती है कि यीशु किस प्रकार भले कामों को करता फिरा (प्ररितों 10:38)। उसने बीमारों को चंगा किया, उसने दुष्टात्मा ग्रसित लोगों को मुक्त किया, और उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाया (मत्ती 11:4-5)। कृपा का अर्थ अलोचनात्मक या प्रतिकारक होने की बजाय मिलनसार और सज्जन व्यवहार है।

आप सभी लोगों के मित्र कभी नहीं बन सकते, लेकिन आप सभी के प्रति सौम्यता प्रगट कर कर सकते हैं (फिलिप्पियों 4:5)। कृपा दूसरों को खुश करने का कोई मौका नहीं चुकना चाहती। किसी ने इस प्रकार से लिखा है, म इस संसार की यात्रा में केवल एक ही बार होकर गुजरता हूं, यदि किसी भी मनुष्य के लिए मुझे कोई भी भलाई करने या किसी की कैसी भी सहायता करने का अवसर मिलता है तो मुझे उसे अभी ही कर लेना चाहिए। मैं टालम-टोली या उपेक्षा न करूँ, क्योंकि मुझे दोबारा ऐसा अवसर नहीं मिलेगा।

13:4

प्रश्न 3. "प्रेम डाह नहीं करता" (जलता नहीं) का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : डाह न करने वाला पम उदार होता है, उदार प्रेम दूसरों से हिरस करने वाला प्रेम नहीं है। जब भी आप किसी काम को करना शुरू करते हैं तो आप को पता चलता है कि कुछ दूसरे लोग ह जो उसी काम को आप से बेहतर कर सकते हैं। उनसे डाह न करें। डाह एक ऐसी कु-भावना है, जो आपके समान व्यापार करने वाले अन्य लोंगों के विरूद्ध उत्पन्न होती है। डाह ऐसी आत्मा है जो दूसरों को अन्य की चीजों को हड़पना, दूसरों को मिलने वाले श्रेय या सम्मान को पान की कोशिश में लगी रहती है। उदारता अपने आप में अपनी कार्य क्षमता तथा अपनी परिस्थितियों में सन्तुष्ट व धन्यवादित रहती है। उदहारण, व्यक्ति किसी से नाराज नहीं होता, बल्कि दूसरों की आशोष, व्यक्तित्व और क्षमता को देखकर सहायता है।

13:4

प्रश्न 4. "प्रेम अपनी बढाई नहीं करता" का क्या अर्थ है?

टिप्पणी: मामूली बातों पर घमण्ड नहीं करने वाला प्रेम विनम्र काम करने के पश्चात प्रगट किया जाने वालो प्रेम विनम्रता कहलाता है। यह वह प्रेम है जिसे आपको भलाई, धीरज, व उदहारण दिखाने के बाद प्रगट किये जाने की जरूरत है। विनम्रता कभी ढ़िढोरा नहीं पिटती कि उसने क्या काम किया है। विनम्रता के कामों व उपलब्धियों की अपनी अलग सूची होती है,

विनम्र व्यक्ति बढा चढ़ाकर बातें नहीं सकता। वह किसी को जानकारी देते समय अतिश्योक्ति नहीं करते। विनम्रता दूसरों को आकर्षित करने, डींग, या दिखावा करने का प्रयास नहीं करती । विनम्र व्यक्ति लोगो का ध्यान अपनी ओर खीचने का प्रयास नहीं करता।

13:4

प्रश्न 5. "प्रेम फूलता नही" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : प्रेम घमण्डी नहीं वरन दीन होता है। काम करने से पहले प्रगट किया जाने वाला प्रेम दीनता है। दीन व्यक्ति अपनी खुशियों का बखान नहीं करता और न ही वह अपनी कमजोरियों को छुपाता है। विनम्र व्यक्ति अपनी क्षमता की वास्तविक्ता को जानता है। विनम्र कभी अपने महत्व, योग्यता, सम्पत्ति या उपलब्धि को लेकर घमण्ड नहीं करता। दीन व्यक्ति अहंकार के साथ अपने आप को उठाने का प्रयास नहीं करता। दीनता न तो किसी को दबाती है और न दूसरों को तुच्छ जानती।

13:5

प्रश्न 6. " प्रेम अनरीति नहीं चलता है" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : कभी अशिष्ट व्यवहार न करने वाला सभ्य प्रेम होता है। शिष्टाचार, सामाजिक सम्बन्धों में पाया जाने वाला प्रेम होता है। शिष्टाचार, हर परिस्थिति में उचित तरीके के साथ व्यवहार करता है। शिष्टाचार अपने व्यवहार व कार्य करने के तरीको में विनीत कृपालु, ख्याल करने वाला व सहानुभूतिशील करने वाला होता है। शिष्टाचार दूसरे लोगों की आदतों; संस्कृतियों और अहमियत के प्रति संवेदनशील होता है। वह दूसरों की जरूरतों व भावनाओं का ख्याल करता है। शिष्टाचार पास पार्ट के समान है जो आपको किसी भी समाज में मिलने जुलने की अनुमति देता है।

13:5

प्रश्न 7. "प्रेम अपनी भलाई नहीं चाहता" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : भलाई नहीं चाहनेवाला प्रेम नि:स्वार्थ प्रेम होता है। नि:स्वार्थ प्रेम अधिकार के क्षेत्र में काम करने वाला प्रेम है। नि:स्वार्थ व्यक्ति अपने अधिकारों की खोज में नहीं रहता। नि:स्वार्थ भावना अपने लिए बड़ी बातों की चाह नहीं करती। वस्तुओं में कोई महानता नहीं होती। केवल नि:स्वार्थ परमेश्वर ही महान है। नि:स्वार्थ भावना, दूसरे लोगों मे परमेश्वर के कार्यो व उसके राज्य को बढाने की खोज करती है। नि:स्वार्थ व्यक्ति अपनी महत्वाक्षाओं को पूरा करने की खोज मे नहीं रहता, उदहारण के लिये पद, प्रतिष्ठा, अधिकार, प्रसिद्धि, सम्पत्ति तथा सुख। नि:स्वार्थ कभी अपना फायदा नही देखता और न ही अपने फायदे के लिए दूसरों को नुकसान पहुचाता है। सांसारिक लोग आराम व खुशी की तलाश में लगे रहतें हैं और वे साचते हैं कि खुशी का अर्थ प्राप्त करना, पाना या लोगों द्वारा सेवा किया जाना है। जबकि लेने या पाने में वह आनन्द नहीं मिलता जो आनन्द हमें देने और सेवा करने में आता है। यीशु ने कहा "कि जो कोई तुम में बड़ा होना चाहता है वह तुम्हारा दास बने।" (मत्ती 20:26)

13:5

प्रश्न 8. "प्रेम झुझलाता नही" का क्या अर्थ है?

टिप्पणी : जो प्रेम झुझलाता नहीं वह नम्र होता है। नम्रता ऐसा प्रेम है जो दूसरे व्यक्ति को उसके प्राकृतिक अन्दरूनी स्वभाव में प्रेम करता है। मनुष्य के स्वभाव में बुराई से बढ़कर विनाशक तत्व और कुछ नहीं है। बुरा स्वभाव रिश्तों परिवारों को, तथा समाज तक को तोड़ डालता है। यह रिश्तों, दोस्ती और पडोसियों के बीच खटास पैदा करता है। मानव जाती के भीतर बुराई सबसे बडो विनाशक शक्ति है। बुरे स्वभाव में, तुनक मिजाज, क्रोध, क्रूरता, घमण्डी, आत्म धार्मिकता, हठीलापन, नाराजगी अक्षमा की आत्मा तथा उदासीनता शामिल होते हैं। बुरा स्वभाव या झुझलाहट किसी गहन समस्या का लक्षण है। यह ऐसे

समय में गढ़े मुर्दे उखाड़ देता है जब लोग सावधान न हों। यह हठिले मन तथा बेवफा लोगों सच्चाई बखान कर देता है। केवल अपने जीवन के सभी क्षेत्रों को पूरी तरह यीशु मसीह के हाथों में सौपने पर ही यीशु आप के स्वभाव को बदल सकता है। प्रेम आपके अन्दरूनी मनुष्यत्व में प्रवाहित होने लगेगा। नम्रता अधिकतर दूसरों या परिस्थियों से मिलने वाली चोटों या दु:खों को सह लेती है। नम्रता उत्तेजना के साथ किसी भी बात के प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं प्रगट करती। नम्र व्यक्ति कभी किसी सुनी-सुनाई बातों को लेकर व्यक्तिगत हमला नहीं करता है।

13:5

प्रश्न 9. "प्रेम बुरा नही मानता" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी: बुरा नहीं मानने वाला प्रेम,क्षमा करने वाला प्रेम है। क्षमा करने वाला प्रेम कटे रिश्तों के बीच भी प्रेम करता है। कई लोग दूसरों के बुरे कामों की लम्बी सूची बनाये रखते हैं। वे अपनी नाराजगी को लगातार हवा देते रहते हैं अपनी आत्म-धार्मिकता का बहुतायत से बचाव करते और वह आपको अपने पक्ष में करने के लिए अभियुक्त की बुराईयों की सूची दिखाते रहते हैं। इब्रानियों 12:15 हमें सावधान करता है कि कडवाहट से भरे लोग परेशानियाँ खड़ी करतें तथा बहुत से लोगों को भ्रष्ट कर देते हैं। वे किसी भी व्यक्ति पर शक करने लगते हैं रिश्तों को तोड़ देते हैं, और एक दूसरे की चुगली बदनामी करने के द्वारा माहौल खराब करते हैं। केवल परमेश्वर ही इस प्रकार दूषित परिस्थितियों को ठीक कर सकते हैं। यदि मनुष्य यह स्मरण रखें कि परमेश्वर उसके पापों को क्षमा करता है तथा फिर उसे कभी याद नहीं करता, तो मनुष्य भी उसके पापों को क्षमा कर सकता है। क्षमा करने वाला प्रेम तुरन्त लोगों द्वारा पहुँचाई गई चोट को क्षमा करके उन्हें भूल जाता है। क्षमा करने वाले प्रेम से कड़वाहट या नाराजगी नही होती। वह पल्टा नहीं लेता और दूसरों की पुरानी गलतियों को याद नहीं करता।

13:6

प्रश्न 10. "प्रेम कुकर्म से आनन्दित नहीं होता। परन्तु सत्य से आनन्दित होता है" का क्या अर्थ है?

टिप्पणी : वह प्रेम जो कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दि होता है, ईमानदार है। ईमानदार प्रेम अपनी असफलता व कमजोरी को मान लेता है। ईमानदारी स्वीकार करती है कि हर व्यक्ति अपने जीवन में कभी न कभी असफल होता है और उनमें कमजोरियाँ होती हैं।

ईमानदार व्यक्ति कभी किसी असफल या कमजोर व्यक्ति को सफलता से चढ़ी आँखों से देखता या घूरता नहीं है। इसके बजाय ईमानदार व्यक्ति दूसरों को सत्य व धार्मिकता में प्रगति करते हुए देखकर आनन्दित होता है ।

13:7

प्रश्न 11. "प्रेम सब बातों को सह लेता है" का क्या अभिप्राय है

टिप्पणी : सहन करने वाला प्रेम लापरवाह लोगों की सह लेने वाला प्रेम है। सहन करने वाला प्रेम कभी दूसरों को डराता या धमकाता नहीं है वह दूसरों की अनुचित बातों को देखकर चुपचाप रहता है। वह दुसरों का प्रतिष्ठा का घयाल रखता है और बुराई नहीं करता।

13:7

प्रश्न 12. "प्रेम सब बातों की प्रतीति करता है" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : प्रतीति करने वाला प्रेम संदहाजनक लोगों के प्रति प्रगट किया जाने वाला प्रेम है। आपको प्रभावित करने वाले लोग ही आप पर भरोसा करने वाले लोग होते हैं। लेकिन संदेहजनक परिस्थिति में लोग बहुत उदास हो जाते हैं सच्चाई को जाने बिना ही, कई बार लोग अनुमान लगाने लग जाते है कि दूसरें लोगों का विचार या मकसद बुरा है। जबकि भरोसा करने वाला प्रेम उच्च व सकारात्मक विचार रखता है। बिना किसी उचित कारण के किसी पर संदेह करना: या दूसरे के विचारों या कामों पर संदेह करना सही नहीं है। भरोसा या प्रतीति करने वाला प्रेम दूसरों पर भरोसा करते हुए अपनी जीवन के गहन व गुप्त

विचारों, समस्याओं व कमजोरियों को दूसरें के सामने खोलकर रख देता है। वे चाहें तो आपके बारे में प्राप्त जानकरियों का नाजायज फायदा भी उठा सकते हैं, परन्तु आप उनसे प्रेम करने के कारण उन पर भरोसा करते हैं।

13:7

प्रश्न 13. "प्रेम सब बातों की आशा रखता है" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी: आशावादी प्रेम आत्म-धार्मिक लोगों के प्रति प्रगट होने वाला प्रेम है। आत्म -धार्मिक जन सोचता है कि वह हमेशा ठीक व दूसरा व्यक्ति गलत है। दुसरें उसकी नजरों में कभी ठीक साबित हो ही नहीं सकता। वह उन्हें कभी बदलते हुए भी नहीं देखना चाहता। सबसे बड़ी बात यह है कि वह उसे बदलते हुए इसलिए नहीं देखना चाहता है ताकि वह अपने आप को सही साबित कर सके। लेकिन आशावादी प्रेम दूसरों के जीवन में परिवर्तन देखें बिना हार नहीं मानता, बल्कि वह अपेक्षा करता है कि परमेश्वर उसके जीवन में कार्य करके उसे बदलेगा। इस प्रकार आशवादी प्रेम किसी भी परिस्थिति में आशा नहीं छोड़ता वरन अपेक्षा करता है कि परमेश्वर कठिन से कठिन परिस्थियों मे भी अपनी सर्वसिद्ध योजना को पूरा कर सकता है।

13:7

प्रश्न14. "प्रेम सब बातों में धीरज धरता है" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : धीरज धरने वाले प्रेम की माप समय से पहले होती है। धीरज धरने वाला प्रेम लगातार उन्ही कामों को करता रहता है जो परमेश्वर की निगाहों में ठीक हैं। वह अपने भले काम करने, फल लाने, विश्वास की दौड़ दौड़ने से बाज नहीं आता चाहे उसे किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़े। धीरजवन्त प्रेम की कोई समय सीमा नहीं होती। प्रेम किसी समय सीमा में सीमित नहीं होता। बल्कि यह हर मसीह के दैनिक जीवन की बहुमूल्य शक्ति है।

13:8

प्रश्न 15: "प्रेम कभी टलता नहीं" का क्या अभिप्राय है?

टिप्पणी : अटल प्रेम, प्रेम का सार है। प्रेम कभी खत्म नहीं होता। वह हमेशा उपलब्ध होता है। जितने लोग उसे धारण करते हैं वह उन सब को प्रभावित तथा पूर्ण रूप से सन्तुष्ट करता है परमेश्वर ही प्रेम है, इस कारण वह कभी नहीं टलता।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम 1कुरिन्थियों 13:1-13 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा, और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करं। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. 1 कुरिन्थियों 13 से कुछ सम्भावित प्रयोगों के उदहारण

13:1, आत्मिक वरदानों की बजाय प्रेम पर ध्यान केन्द्रित करें।

13:1-3 होने द को आपके बोलते व बलिदान चढ़ाते समय प्रेम झलके।

13:4 अपने जीवन साथी व बच्चों के साथ धीरजवन्त बनें। बिना चिढ़चिढ़ाये हुए दर्द को सह लें।

13:4 कृपालु बने! जिस भी व्यक्ति से आप मिलते हैं उसके साथ भलाई ही करें और सदा उनकी सहायता करने की खोज में रहें।

13:4 उदारवादी बने! लोगों में पायी जाने वाली खूबियों व उनके द्वारा प्राप्त की गयी उपलब्धियों को सराहें।

13:4 अपनी खूबियों व उपलब्धियों के प्रति विनम्र बने रहें।

13:4 नम्र बने! अपने को बढ़ा-चढ़ा कर पेश न करें, प्रभुता न करें व दूसरों को तुच्छ न जानें।

13:5 शिष्ट बने! हर परिस्थिति में उत्तम व्यवहार व आचरण करने का प्रयास करें।

13:5 नि:स्वार्थी बने! अपनी स्वार्थी महत्वाक्षाओं को नहीं बल्कि दूसरों के जीवन में परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने का प्रयास करें।

13:5 नम्र बने! गुस्से से बचे, जल्दी से दूसरों की कही बातों पर विश्वास न कर लें, उन पर निजी आक्रमण न करें।

13:5 जिस प्रकार से परमेश्वर ने आपको क्षमा किया है ठीक उसी प्रकार से आप अपने अपराधियों को क्षमा करें।

13:6 ईमानदार बने! लोगों की असफलता को बुरी निगाहों से न देखें बल्कि उनकी उन्नति को देखकर प्रसन्न हों।

13:7 लोगों की चुगली करने से बचने के द्वारा लोगों के सम्मान व प्रतिष्ठा को बनायें रखें!

13:7 भरोसा रखें। किसी ठोस वजह के बिना लोगों के नीयत या प्रतिक्रियाओं को लेकर संदेह न करें।

13:7 आशावादी बने! किसी भी व्यक्ति कि प्रति आशा न छोड़े लेकिन अपेक्षा करें कि परमेश्वर इस कठिन परिस्थियों के बीच में भी अपनी योजना को पूरा करेगा।

13:7 धैर्यवान बने! परमेश्वर की निगाहों में भले कामों को करने से कभी न चूकें।

13: 8-13परमेश्वर तथा लोगों को प्रेम करना अपने जीवन का महत्वपूण लक्ष्य बनाये।

2. 1 कुरिन्थियों 13 से व्यक्तिगत जीवन में इस्तेमाल की जाने वाली बातों के उदहारण।

जब मेरे बच्चे तुरन्त मेरा कहना नहीं सुनते तो मुझे बहुत झुझलाहट होती है। इसलिए मैं उनके साथ धैर्यवन्त तथा कृपालु होने का अभ्यास करता हूँ।

मैं ने गौर किया है कि मेरे जीवन में दूसरों के जीवन प्रति हमेशा सन्देह की भावना रहती है। प्रेम का अर्थ भरोसा होने के कारण, मैं उसके द्वारा भली मनसा से किये गए कार्यो के प्रति सकारात्मक विचारों को रखने और उसके कामों व बातों को सम्मान देने का अभ्यास करता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना — प्रतिउत्तर

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें 1 कुरिन्थियों 13:1-13 में सिखाई हैं।

(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]*
		दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन के समूह में होकर प्रार्थना करते रहें। एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारो** (2मिनट)	[निर्धारित कार्य]
		अगले अध्याय के लिए

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ 1कुरिन्थियों 13:1-13 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: प्रेरितों के काम 1:1-4:22 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। मसीह : 2 कुरिन्थियों 5:17। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे को अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।